

(2) कर्मवाचक कृदन्त प्रत्यय-

जब किसी क्रिया या मूलधातु के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह कर्म (को) के अर्थ का बोध कराए, कर्मवाचक कृदन्त प्रत्यय कहलाते हैं।

जैसे- ओढ़ना- ओढ़ + नी = ओढ़नी, सुँघना- सुँघ + नी = सुँघनी
 पहरना- पहर + औनी = पहरोनी, खेलना- खेल + औना = खेलौना

③ करणवाचक कृदन्त प्रत्यय-

जब किसी क्रिया या मूलधातु के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह साधन के अर्थ का बोध कराए अर्थात् करण कारक (से) के अर्थ में प्रयुक्त हो, करणवाचक कृदन्त प्रत्यय कहलाता है-

जैसे- बेलन- बेल + अन, फूँकनी- फूँक + नी,
 कतरनी- कतर + नी, छलनी- छल + नी,

મેલા- મેલ+આ, ઠેલા- ઠેલ+આ,

ખુરચન- ખુરચ+અન, ચણી- ચાણ+ની,

શાડૂ- શાડ+કુ, ઢબ્બકન- ઢબ્બ+અન

④ भाववाचक कृदन्त प्रत्यय-

जब किसी क्रिया या मूलधातु के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह भाव के अर्थ का बोध कराए, भाववाचक कृदन्त प्रत्यय कहलाता है-

जैसे- पढ़ना- पढ़ + आई = पढ़ाई, पड़ना- पड़ + आई = भड़ाई,
 -चढ़ना- चढ़ + आई = चढ़ाई, घूमना- घूम + आव = घुमाव

पुनना - पुन + आव = पुनाव, मिलना - मिल + अ = मेल

मिलना - मिल + आप = मिमाप, खोदना - खोद + आई = खुदाई,

दिखाना - दिखा + आवा - दिखावा, बुलाना - बुला + आवा = बुलावा

भूलना - भूल + अ = भूल, गड़गड़ाना - गड़गड़ा + आहल = गड़गड़ाहल

मुस्कुराना - मुस्कुरा + आहल = मुस्कुराहल

थकना - थक + आवल = थकावल

घबराना - घबरा + आहल = घबराहल

⑤ क्रियाबोधक कृदन्त प्रत्यय-

जब किसी क्रिया या मूल धातु के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए और वह प्रत्यय भी क्रिया का बोधक हो, क्रियाबोधक कृदन्त प्रत्यय कहलाता है -

जैसे- चलना + हुआ = चलना हुआ, पढ़ना + हुआ = पढ़ना हुआ,
 चलनी + हुई = चलनी हुई, पढ़नी + हुई = पढ़नी हुई
 हँसते + हुए = हँसते हुए, खाते + हुए = खाते हुए।